

गुरुवाणी

युवक अपने में सद्गुणों को लावें। गुरुजनों के प्रति श्रद्धा रखें आप अपने में जितना अधिक सद्गुण लायेंगे आपके लिये एवं विश्व के लिए कल्याणकारी होगा। निर्भीक बनें किन्तु उद्वेग नही। आप लोगों को अपने में सद्गुणों का विकास करते हुए माँ सर्वेश्वरी का सपूत बनना है।

—पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी



अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015



वर्ष-१५, अंक २२, वाराणसी।

सोमवार ३० नवम्बर २०१५ ई०

सहयोग राशि ४.२५

मनुष्य की काया का अर्थ उसके चलते फिरते आवरण से ढका प्राणवान शरीर से है। जिसके अन्दर प्राकृतिक रूप से असंख्य नस-नाड़ियाँ, तन्त्रिका तन्त्र, रक्त नलिकायें आदि चमत्कारिक रूप से कार्य करते हैं। संसार में प्रत्येक देहधारियों को काया के माध्यम से ही अपने क्रिया-कलाप का संचालन करने हेतु प्रकृति ने अनुमति दिया है। भली भाँति विदित है कि सृष्टि में विधाता के द्वारा मनुष्य को ही उत्कृष्टता प्रदान की गयी है। माँ के गर्भ में निर्धारित अवधि के अन्दर हृदय से लेकर सम्पूर्ण अंग प्रत्यंग का निर्माण होता है तथा इसी आवरण के अन्तर्गत समस्त प्राकृतिक मशीनरियाँ जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कार्यरत रहती हैं। कहा गया है कि “शरीर माद्यं खलु धर्म साधनं” यानी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का मूल शरीर ही है। इसका स्वस्थ रहना उसी प्रकार आवश्यक है जिस प्रकार किसी उड़ते हुए हवाई जहाज के एक-एक पुर्जे का सतत क्रियाशील व दुरुस्त होना। अस्वस्थ मनुष्य निर्जीव एवं पृथ्वी का भार सिद्ध होता है एवं दूसरों के कष्ट का कारण भी बनता है। परमात्मा के द्वारा प्रदत्त जीवन का आनन्द लेने से सर्वथा वंचित हो जाता है। इसलिये आरोग्य, स्वस्थ रहना मनुष्य की सबसे बड़ी पूँजी है जिससे कि वह पृथ्वी पर अपने उत्तरदायित्वों का भली भाँति निर्वहन कर सके। इसके लिये आवश्यक है कि हम अपने जीवन क्रम को ऐसा ढाले जिससे यह हमारी काया जिसे परमपूज्य भगवान अवधूत राम जी ने ईश्वर का मंदिर कहा है, को जीवन्तता की स्थिति में रख सके। छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखकर हम अपनी इस दुर्लभ काया से जीवन का प्रतिपल आनन्द ले सकते हैं। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज

काया

तक विधाता ने चौबीस घंटे ही प्रत्येक मानव को प्रदान किया है। मनुष्य अपने पुरुषार्थ, प्रयत्न, प्रारब्ध के द्वारा उसमें परिवर्द्धन कर मनोनुकूल लक्ष्य को प्राप्त कर अपने अभीष्ट को प्राप्त करता है। सर्वविदित है कि अपने त्रुटियों की पुनरावृत्ति जो नहीं करता है जो भूतकाल से सीख लेता है वह ही अक्षय जीवन का अधिकारी होता है एवं सद्पात्रता ग्रहण करके अघोरेश्वर के कृपा का अधिकारी बनता है। शरीर के माध्यम से ही हम परब्रह्म परमेश्वर, समाधि की अवस्था, परमानन्द की अवस्था का अनुभव कर लेते हैं। जिसके लिये मनुष्य तन को बड़ी कठिन तपश्चर्या में ढालकर कुन्दन बनाना पड़ता है। वह मनुष्य जो स्वयं अपनी कमियों पर ध्यान देता है तथा उसके परिमार्जन हेतु ईमानदारी से सतत सावधान रहता है। दम्भ युक्त आचरण से सदा दूर रहता है। वही स्वास्थ्य सुख यानी निर्मल काया को प्राप्त करता है। अपनी काया को निर्मल एवं सुपात्र बनाकर हम दैव रश्मियों को संजोकर रख सकते हैं। काया में कपालेश्वर के द्वारा प्राकृतिक रूप से प्रत्येक मनुष्य के कपाल को शीर्ष पर स्थान दिया गया है। यानी मस्तिष्क ही इस पूरे काया रूपी साम्राज्य का नियंत्रक होता है। वह दिशासूचक मशीन की भाँति यह इंगित करता है कि सम्पूर्ण काया का गमन सही मार्ग पर हो रहा है। यद्यपि काया और मन में बड़ा ही अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। एक स्थूल तो दूसरा सूक्ष्म जिससे कर्म और ज्ञान के द्वारा हम इसे संवारते रहते हैं। काया के प्रखरता हेतु कौमार्य या कुमार काल के अन्तर्गत तप के द्वारा मर्यादित ढंग से जीवन यापन कर साधना करनी

पड़ती है। इसीलिये बार-बार कहा गया है कि मानव शरीर बड़ा ही दुर्लभ है। जबकि शेष साधन जीव को अन्यान्य योनियों में भी पृथ्वी पर मिल सकता है। यद्यपि शरीर का हम वायोलॉजिकल विश्लेषण करें तो तुलसीदास जी द्वारा बताया गया “क्षिति जल पावक गगन समीरा, पंच रचित यह अधम शरीर” का ही अक्षरशः प्रतिपादन हो जाता है। यानी इस शरीर में धातु, अधातु लवण आकाश एवं जल के अवयव इत्यादि तत्त्व मिलते हैं जिससे प्राण के अभाव में शरीर का नाम मिट्टी दिया जाता है। इसलिए कहा गया है कि आत्मा के वाहन के रूप में यह शरीर अजस्र ऊर्जा का स्रोत है। इसकी उपेक्षा आत्मा भी बर्दाशत नहीं कर पाती। इसलिये आवश्यक है कि इनका संरक्षण हम अदम्य साहस, उत्साह एवं प्रसन्नता के साथ आजीवन करते रहे। इसी मानव शरीर से लोक एवं परलोक दोनों के सुधार का भी अवसर हमें प्राप्त रहता है। शरीर को साथ लेकर ही तुलसीदास जी ने मानव के लिए सरल धर्म अपनाये जाने को प्रेरित किया है- “परहित सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहीं अधमाई” अतः अपने ही शरीर के तरह दूसरों मनुष्यों का भी ध्यान रखकर जो कर्तव्य पर आरूढ़ रहते हैं। वे ही ईश्वर, अघोरेश्वर अथवा औषड़ के सच्चे उपासक कहे जा सकते हैं। इसी काया रूपी आवरण के अन्तर्गत दानवी, आसुरी शक्तियाँ भी छिपी रहती हैं जो देवत्व के भाव पर कभी-कभी प्रभावी होकर उसे परास्त कर देती हैं और हमारा आचरण अमर्यादित अधम का हो जाता है। अतः हम शरीरधारकों के लिए आवश्यक है कि इस शरीर के जो १०

दरवाजे हैं यानी दसों इन्द्रियों के भोगों पर अपना प्रभावी अंकुश रक्खें। यह अंकुश मनुष्य के मनःशक्ति के द्वारा किया जा सकता है। ऐसा हो ही नहीं सकता कि जिस शरीर के अन्तर्गत मन दूषित, कलुषित अथवा कुपित है उसकी काया निर्मल हो। रामचरित मानस में उद्धृत है कि “मन मलिन तन सुन्दर कैसे, बिषरस भरा कनक घट जैसे” तन को स्वच्छ सुन्दर एवं निर्मल बनाने के लिए अघोराचार्य बाबा कीनाराम जी के द्वारा मनुष्यों को बताया गया है कि—

आप आपमे देखियो, आप आप में होई।
आप निरन्तर रमी रहे, या पद पावे सोई।।
तामे तीन पुरुष भये परम चतुर एक नारी।
नभ, क्षिति, पावक, पवन, जल रचना जगत विचारी।।

अघोराचार्य जी बाबा कीनाराम जी के द्वारा शाश्वत रूप से प्रत्येक मानव को उसे अपने ऊपर ही ध्यान देते रहने के लिये सावधान किया गया है। जिसकी रक्षा उसके काया में अवस्थित सबल मन से ही होती है एवं मानव जीवन को सफल योनि प्राप्त होती है। समर्थ काया का अर्थ शरीर के प्रत्येक अंग के समान रूप से एक दूसरे से तालमेल बिठाते हुए कार्य करते रहने से ही लगाया जा सकता है। अंगों में समन्वय की स्थिति न होने पर यही काया सताने लगती है। जिससे कि नाना प्रकार के रोगों का आक्रमण होता है। इसका प्रभाव हमारे मन पर भी पड़े बिना भी नहीं रह सकता। इसीलिये तन को स्वच्छ, सुन्दर एवं निर्मल बनाये रखने की महती आवश्यकता पर बल दिया गया है। महाराज विदुर के द्वारा महाभारत में संसार में मनुष्य के लिए छः सुखों का वर्णन किया गया है। “अर्थगमेनित्य निरोगिता च, प्रियाश्च भार्या प्रियवादिनी च,

श्रेष्ठ पृष्ठ दो पर

स्वस्थ-भक्ति

निर्मल मन जन जो मोहिं पावा।
मोहि कपट छल छिद्र न भावा।।

कविवर तुलसीदास जी की उक्त पंक्तियाँ मनुष्य के जीवन के हर क्षेत्र में अक्षरशः लागू होती हैं, श्रमिक से लेकर वैज्ञानिक तथा किसान से लेकर उच्च व्यवसायी तक की कार्य पद्धति में निखार का यही राज है। “कर्तव्य ही पूजा है” की उक्ति तभी सार्थक होती है जब स्वस्थ तन से व्यक्ति अपने कार्य में दत्तचित्त होकर कार्य करें तथा एकाग्र मन से अपनी साधना में वह रत रहे। स्वस्थ तन, निर्मल मन से आत्मा की परिपुष्टि होती है, प्रत्येक मनुष्य के अन्दर की अज्ञात शक्ति निर्विकार भाव से प्रज्वलित हो उठती है, जब उसे स्वस्थ शरीर के वातावरण की अनुकूलता प्राप्त होती है। निर्मल मन, स्वच्छ तन से ईश्वर के प्रति भक्ति भाव तथा अपने कर्तव्य के प्रति समर्पण भाव की प्रेरणा स्वमेव व्यक्ति को प्राप्त होने लगती है। जैसे किसी चिकित्सालय में चाहे कितनी भी दुर्लभ दवाईयाँ हो, आधुनिक मशीनें फिट हो, कुशल चिकित्सकों की भरमार हो परन्तु जबतक वहाँ के परिसर के एक-एक इंच में सफाई व्याप्त न हो तबतक सब होते हुए लाभ की आशा किये जाना व्यर्थ है। बचपन से ही हमारे समाज में बालक-बालिकाओं को अनजाने में ही सफाई संस्कार दिया जाना एक परम्परा है। जब बच्चे को भोजन के पूर्व तथा शौच के उपरान्त भली भाँति हस्तप्रक्षालन का ज्ञान करा दिया जाता है। इसी प्रकार पूजा-पाठ, आराधना, उपासना के पूर्व श्रद्धालु भक्त को पहले तन के वातावरण को तदनुकूल कर मन को एकाग्र बनाना आवश्यक होता है। जिससे पूजा-पाठ, जप, तप का पूरा लाभ मिल सके। अन्यथा धूल से सने सुस्वाद भोजन का भी जायका चौपट हो जाता है जबकि स्वच्छ रूखा सूखा भोजन लेने वाले व्यक्ति के चेहरे पर कान्ति दमकती रहती है। जिसे उसे जीवन का वास्तविक आनन्द अवर्णनीय रूप से प्राप्त होता रहता है।

मानव तन एवं मन को सदैव स्वच्छ रखने का उपाय बड़ा ही सरल है। वह है व्यक्ति के अपनी लचीली जिह्वा पर नियंत्रण। इसके साथ ही अपने बिगड़ल मन पर कुशल घुड़सवार की भाँति लगाम की सजगता। यह एक सतत प्रक्रिया है जिसका अनुपालन हमें अपने जीवनक्रम का भाग बनाना होगा। अन्यथा “दुइ कि होई एक समय भुआला। हँसब ठाई फुलाइब गाला।।” से कोई लाभ नहीं होता है। तन, मन से स्वस्थ व्यक्ति का झुकाव सदैव परमार्थ, परोपकारिता की ओर होता रहता है। ऐसे व्यक्तियों की प्रवृत्ति अनाचार, पापाचार, अनैतिकता, धोखाधड़ी व अन्यान्य धूर्तता पूर्ण धिनौने कार्यों के प्रति कर्तई नहीं होती। इसके विपरीत जो अस्वस्थ मानसिकता का होता है उसे उपरोक्त कार्य ही सुरुचिपूर्ण प्रतीत होते हैं। जिसका वे जीवन भर शिकार बने रहते हैं तथा जीवित अवस्था में भी वे बेमौत पल-पल मरने के लिये बाध्य होते हैं। अस्तु, एक जाग्रत मानव का कर्तव्य है कि परमात्मा के प्रकृति के अनुसार अपने को स्वस्थ रखें। तन, मन को एक स्वर में बाँधे जिससे कि सच्ची भक्ति भावना को वह सहृदय अंगीकार कर अपना जीवन धन्य बना सकें।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ 0542-2277155.

e-mail-kinaram@rediffmail.com

www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

वसस्य पुत्रो अर्थ करी च विद्या षड् जीवलोकस्य सुखानि राजना।” जिसमें प्रत्येक दिन के निरोगी काया को प्रधानता दी गयी है। इसी तरह से छः महान दुःखों का भी वर्णन मिलता है। कुग्रामवासः कुलहीन सेवा, कुभोजनं क्रोध मुखी च भार्या, मूर्खश्च पुत्रो विधवाश्च कन्या, विनाग्निना षड् प्रदहन्ति कायः। यानी उपयुक्त छः दुःख मनुष्य के काया का निरन्तर बिना अग्नि के ही दहन करते रहते हैं। वैसे हम देखें तो इसी शरीर से ऋषि, मुनियों से लेकर साधारण मनुष्यों तक ने अपने-अपने कर्मानुसार शरीर को सुख या दुःख दिया है। अतः यह हमारी काया हाड़ मांस का एक चलता फिरता लोथड़ा नहीं है। बल्कि प्रकृति की वह अनुपम भेंट है जिसका अनुभव शरीरधारी को ही होता है। अतः आवश्यक है कि इसके महत्व को देखते हुए दो इंच की जीभ की लोलुपता के प्रभाव में हम अपने साढ़े तीन हाथ के काया का नाश न करें। स्वाद फैशन एवं आराम को न अपना कर आरोग्य की दृष्टि से अपने जीवन कर्म को ढालना श्रेयस्कर होगा। प्रातः जल्दी उठना, रात को जल्दी सोना शरीर से नियमित व्यायाम करना, त्वचा को रगड़ रगड़ कर भली प्रकार साफ करना, कुपथ्य का त्याग करना, पाचन क्रिया का स्वस्थ रहना, स्वस्थ शरीर के लिए कारक का कार्य करते हैं। सात्विक भोजन से ही सात्विक विचार मन में उत्पन्न होता है। हम जानते हैं कि इस शरीर रूपी किला का रक्षक हमारा वीर्य यानी धातु ही होता है। जिसे शरीर वज्रवत बनता है। इसके प्रभाव में हमारे चेहरे पर ओज तेज एवं कान्ति का प्रस्फुटन होता रहता है। साथ ही साथ हकीम, डाक्टरों एवं नाना प्रकार के पूजा-पाठ से भी हमारी स्वतः की रक्षा हो जाती है। जिससे कि हम सबल होकर समाज के काम में आते हैं। जबकि असक्त व्यक्ति अपना बुरा प्रभाव छूट की बीमारी की तरह अन्य लोगों को भी कायर, आलसी, निकम्मे, निर्बल बनाकर समाज को ही कमजोर बनाते हैं। फलस्वरूप संसार में पाप एवं अनैति बढता है। दुर्बल काया का व्यक्ति अनैति के साथ कर्तई लड़ नहीं सकता। जिससे नाना प्रकार की सामाजिक बुराईयाँ समाज में घर कर लेती हैं। कायर, दबू कभी भी अन्यायी का प्रतिकार नहीं कर सकते हैं। हमारी प्रत्येक दिन की जिन्दगी सूर्योदय के साथ शुरू होती है एवं सोने तक समाप्त हो जाती है। जन्म लेने के बाद से ही आयु क्षय का यह क्रम अबाध रूप से चलता रहता है। बालपन, तरुणावस्था, जवानी, प्रौढ़ावस्था एवं बुढ़ापे में हमारी काया बदलती रहती है। जैसा कि

काया

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है “देहिनोऽस्मिन्मन्यथा देहे, कौमारं यौवनं जरा” यानी मनुष्य के इस प्राकृतिक प्रवाह में इन्द्रिय भोगों, पदार्थों के स्वामित्व को सांसारिक सुखों को लक्ष्य बनाकर मनुष्य अपने जीवन के बहुमूल्य रत्नों को खो देता है और अन्त काल आने पर मोह एवं सांसारिक प्रमाद से भरे वह पश्चाताप की अग्नि में जलने लगता है। यह सारा संसार अब उसे भारस्वरूप प्रतीत होता है तथा असमर्थ की तरह वह मात्र अपने भूतकाल के दिनों को याद कर हाथ मलता रह जाता है। हालांकि व्यवहारिक जीवन में मनुष्य जीवन भर आकांक्षा लिये रहता है। वह इसके लिये नाना प्रकार के प्रयोजन करता है। परन्तु सांसारिक कामनाओं से ग्रस्त मनुष्य अपने भीतर पड़ी शक्तियों को जाग्रत ही नहीं कर पाता। कहने का तात्पर्य है कि “जब से सूझे तब से बूझे” को चरितार्थ करते हुए हमें आज से ही अपने आत्मबल को बड़ाकर छिपी शक्ति का विकास करना एकमात्र विकल्प है क्योंकि मानव काया जैसा अलभ्य वस्तु पाकर भी यदि परमात्मा की इच्छा का ध्यान नहीं रखा गया तो फिर मानव के शरीर और पशु के शरीर में अन्तर ही क्या हुआ? यह भी ध्यातव्य है कि शारीरिक दृष्टि से मनुष्य कितना भी बली हो जाय परन्तु यदि वह प्रबल आत्म सम्पदा का स्वामी नहीं है तो वह मणि विहीन सर्प की तरह ही कहा जायेगा। भारतवर्ष में साधारण रहन-सहन के महात्माओं, फकीरों के आगे बड़े-बड़े धन्नासेठ, बलशाली मनुष्य भी कृपा की भीख हेतु गिड़गिड़ाते रहते हैं। जिससे सिद्ध होता है कि मनुष्य की महानता सांसारिक वैभव को पाने में नहीं है बल्कि पारलौकिक प्राकृतिक दृष्टि से सक्षम होने में है। अस्तु, किसी भी तरह अपने काया को हमें आलस्य प्रमाद अथवा अन्यान्य विकारों से सदैव वंचित रखकर अच्छे कार्यों में अपने को सतत व्यस्त रखना चाहिए। जिसके कार्यों में स्फूर्ति होती है जिसने कठिन संघर्ष व परिश्रम से जीवन में सफलता पायी हो, वह अवश्य ही स्वस्थ तन, मन का स्वामी रहा होगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि “तन्दुरुस्ती हजार न्यामत है” तथा स्वस्थ काया एक वरदान है। लेकिन कई बूढ़े पंगु भी अपने में मस्त सुखी पाये गये हैं। जबकि बड़े-बड़े बलिष्ठ नौजवान एवं नव यौवनायें किसी रोग या दुर्घटना का शिकार होकर महत्व खो बैठते हैं। अतः काया के साथ सबल मन का होना भी आवश्यक है। यद्यपि काया रूपी मंदिर को पाकर मनुष्य

शेष पृष्ठ तीन पर

सडलल की कुरीतलतलडुं कल हर डुरकलर से वलरुध करुं

धरुडु डनुडुओलु!

डरलरतलडु संसुकुरतल के सडुडनुध डें डें डलतकीत के डलधुडड से ही सडडलनल कलहलतल है। वकनल शडुडुं से डुडुडल नहुं उतलडुी कलतल, वुडलवलरलक रूड नहुं दे डलतल। कलल के अनुसलर संसुकुरतल डदलतुी रहतुी है। आने वलले डुग डें नहुं डदलल तुल वलष कल रूड ले लेगल। डुडुडकलल डें शलनुतल, सडुडुडुडु डुी लुग सुखुी डे। कनुडल के वलवलह के ललए अडलक डरेशलन नहुं हुनल डडुतल डल। डुडु धरुडु, संघ की शरण डें कलतल हूँ- ऐसुी वलकलरधलरल वलले कु लुग डे वलह डरलरतलडु संसुकुरतल के अतल नलकड डे, वलह हलनुदु धरुडु ही है। नेतल, डुगडु वुडुतल, धनल सेड, सडुडी डुडुडु डे। वरुण-वुडुवसुथल के कलरण ही डरेशलनल, उलकनन, दुःख है। इस डुडुडु से हलनुदु सडलल के डहुत से लुग शलरलरक, डलनसलक, डुडुडुडु कलवलस नहुं कर डलते। शलकुषलत इससे ललड उतलते है। डड नहुं कलहते है कल अडुनल वरुण-वुडुवसुथल तुलडु दे। डुरुवकुं ने दे रलख है, रलखे रहें। डर इस डेरे कु सडडुं। इस अनुडलडु कु सडडुं। सलकुषुं कल संगठन देखें। उनकल वलषलस है कल गुरु-कुरल डे ऐसल संगठन ललडुगे कल वरुण-वुडुवसुथल नहुं रहुगी। सडललक कलडुवन की कुरीतलतलडु कल वलरुध नहुं करुंगे तुल आरुथलक शकुतल, सडललक डलहलषुकलर और कलडुवन डर डलनसलक कष हुतल रहुगल। इस तरलह की कु कुरीतलतलडुं है, डे डरलरतलडु संसुकुरतल

अधुुरेशुवर डलहलडुरु डुडु डुगवलन रलडकुी कल आशुीरुवकन

डें दुःखडु एवं हदुड वलदलरक है, डुडुी दुःखडु है। आडु देखलडे, कनक के सडुडु, कनक के डलरुं सुवडुवर डें हर एक कलतल के लुग गडे डे। डुरलहण रलवण डुी आडु थल, शूदु डुी। डलह कुडुी सडुडुव नहुं कल उनकी शलदुी शकुतुरलडु कुल डें हुतुी। संडुग थल कल शलदुी उसुी कुल डें हुडुी। इस तरलह की शलदुीतलडु उस सडुडु नहुं थुी। लुग खुशहलल, डुरसडु एवं एकनलषु डे। कलरुं डुी आडु रहें इन कुरीतलतलडु के डुरतल अरुडुडु रलखें। अडुी कु आरुथलक शकुतल हु रलहल है उसुी कु सुलकनल है। आडुके डुसुीने की गलडुी कडलई तुकु, डुसलडुनल, नलक वलले, डलडु ले कलडुं। आडु कलतने शुरस से कडलडुल, उन देवतलओं ने कलरुं-तरुं से आडुकु देडुल। अडुने देवतलओं कु आडु डुरलरतल करते है। वलह कलरुं से देगल। वलह कलसुी कल हलस करुंगल, डुरलश करुंगल, दुडुडुडुडु देगल और डुसल देगल। आडु अडुने अरुथ कल संगुरह नहुं कर डलते। कषण डर के ललए, दुल कलर डलर, वलह वलह करुने वलले कलनुतु डलद डें आलुकनल करुने वलले, दुल कलर कनुडलडुं कनुडुी और नषु। उतनल डुरलरुथनल, वलनतुी डुर डुरलडु धन सहकु ही वलनषु। अडुनल शकुतल डुर गुरल करुंगे तुल आरुथलक डलकडुतुी सडुडुडुल लुंगे। डलद नहुं सडुडुडुलुंगे तुल ईशुवर, डुरडलतुल और आतुल के ललए सुलकनल की शकुतल और अवसर नहुं डललेगल। नलरकीडु अवसुथल डुरलडु

करुंगे। डलरुी कुरीतलतलडु कल गलुं डें, डुर डें अडुनल डुडुडु से उनकल वलरुध करुं डलले न डलने डुर आडु अडुनल उदलसलनतल वुडुक करुं। इस तरलह के डलडुडुन से कुडुी ललडु नहुं। डुडुी संसुकुरतल डुर कलहनल डडु कल कलसडुं डडु सडु डलडु उलकन है। हरक कलतल, हरक वरुण डें इससे आरुथलक शकुतल है। डलरुी थुडुी कलरुी डलत आडु अडुलक सडुडुडुते हुंगे। डलह ईशुवर कलनुतन से डुी डलडुकर है। डुरडलतुल से डुी सडुडी डुरलरुथनल करुं कल कनुडल वललुं कल उडुडुल हु। उनके डन वलषलक हु कलते है। डुरलरुथनल, डुरत, कडु, गंगल-डुडुनल से डुरलरुथनल करुं कल कुषु लुग ऐसुे उतुडुन हुं कु इस वलतलवरण कु नषु कर दे। डड कु डुडुडु-कलल कु वुडुवसुथल कु अकषुल सडुडुडुते है। डुडुडु कु डडु डलडुे सलनुकडु सडुडुडुते है। हलनुदु धरुडु के थुी और सलनुकडु डे।

आडुकल हदुडु, डन कडु डुसरे के दुःख से दुःखलत हु कलतल है, उस कषण आडु संत हु कलते है। संत कल डलरुी गुण धरुडु है। कडु आडु कडुलर-तडु धलरण करुते है तुल असुर, देवुीडु गुण डुरलवषु हुने से उलुललस हुतल है। धुडलन, धलरणल, सडललधल अडुने आडु लगने लगतुी है। कलरुं रहलडेगल, उन गुणुं कल, कडुी कल अवलुकन हुने लगेगल, कलसे देखल न सुनल। ईशुवरुीडु गुण डुरलवषु हुं, आडु ललडु उतलडुं। डलरुी अकषुल है।

डलरुी कु डलतलडु है वुे सडलल कल कुरीतलतलडु कल वलरुध करुं। डलले ही डेते, डलडु, डलतल उनके वलकलरुं कु न डलने तडु डुी वलरुध करतुी रहें और कडु आडु ऐसुी कुरीतलतलडु कल वलरुध करुंगुी तडुी डरलरतलडु अणु-डुरडलणु आडुके गुणुं कु देकुंगे। कुरीतलतलडु कल वलरुध करुने के ललए सडुडी वरुण के वुडुतल की आवषुडुकतल है। सडुडी तललक-दहेक की कुरीतलतलडु कु डललकडु डलतलडुं। डलरुी डलतलओं डें सलडुडु, डलकुतल, डुरलतुल हु कल तुलले-डुलहलुले डें डुैलुी कुरीतलतलडु कल वलरुध करुं।

ऐसे डलसुतलषुक, कलतल वलले कु वुडुतल है, उनके ललए डलरुथनल से डुरलरुथनल करुं कल वे इसकल डुरलतुलडु करुं। आडु लुगुं डें डुी, अडुने कलरुं तलक संगठन के डुरलतुलडु की डलतल है, डलरुग कु तुललते, धनलडुनल डुडुडुने लगतुे है। नवडुडुवकुं कल वलकलर डदलल, अकषुी से अकषुी वसुतु तडु डुी असंतुषुडु, डलतल-डुलतल के संसुकुरल के डुरे डुरुव की तरलह नहुं, इससे डुी सतुक हुनल और ललडु उतलनल है। डलरुी डलतलओं की डुरतलडुल से सडलल ललडु नहुं उतलतल। उसडें आडु डलतलओं की डुरतलडुल से सडलल ललडु नहुं उतलतल। उसडें आडु डलतलओं कल डुी सहडुग नहुं है। उस सहडुग डुर आडु सडु डुी उकषुलसलन हुंगे। डड डुरडलतुल से उनके अनुडुरह की कलडुनल करुते है। रुडुतल, कुरीतल कुडुे। डुलवषुडु की डुडुल करुं, डुत कु कुडुे।

आवषुडुकतल सडुडुने की है, सडुडुने की नहुं

धरुडु डनुडुओलु!

डुडुी गकडु की डलतल है कल डनुषुडु कल कलडुवन सडलन नहुं है इसुीललडे तुलल कलतल है। सडलन कलडुवन ही अतुलल हुतल है। हर कषण, हर एक डुरलणुी कु कलहलडे कल कलहे वलह कलसुी डुी वरुण कल हुे डल कलसुी डलरुण कल अनुडलडुी हु अडुने आडुकु सडुडुलले। डलद नहुं सडुडुलतल है तुल उसे डलडु लगतल है, वलह शुरीहतु हु कलतल है, उसकी अडुनल डुरतलडुल कलतुी रहतुी है। उसके हदुडु डें एक उथल-डुथलल सल डलक कलतल है, वलह डुरलणुी अडुने कु सडुडुललने डें असडुडु सडुडुडुतल है। अडुने कु सडुडुलल लेनल ही हर एक डलहलु से सरुवशुरेडुसुकुर कलह गडुल है। अरे डलडु! अडुरलध से डलकु। कषुीण-कलडुल हु कलओगे। अडुने कलडुवन की कडुलतलओं कु डुी डुी डुी। शलनुतलक हुकर वलकलरुं। कुकडुी से डलकु। कलनुते हुे इनसे डलकुने डुर ही वुडुतल सडललध कलतु डें सडुडी कडुी कल सडुडु कुल कलतल है, तडु डुी वल अडुने एकलकुीडुन कु डुरलहणन से अनुडुव करतल है। सडुडुओ अडुलक। सडुडुडुने की आवषुडुकतल नहुं है। इतनल ही सडुडु कलने से व इसे

डरतने से तथल ऐसल आकुरण करुने से डहुत ही गुण, धरुडु, संसुकुरतलतलडु उस वुडुतल कल सुवलगत करुते है। अडुने सहडुगुीडुं के डुरतल अडुलव, डुडुे अडुने डुर वलषुलस नहुं हुने देतल। इसुे गुरल से सडुडुं और डनन करुं। डलह डलडु खलल डलथल कल कलडु है डलडु। हुं, तुल सलधु के डलरुं अकेले की ही आवषुडुकतल है। डलद डलधुडुन डें अडुने सलथ डुरलडु ही लेकर गडे तुल डुषुडु कल सुवलगत डुी उसे कुषुीडुत करतल रहुगल। वुडुीकल उसके सलथ सेकडुं कलडुनलडुं है। अरे डलडु! डलद उन कलडुनलओं कु कुडुे दे तुल कलसुी से डललनल-डललनल वुडुल रहुगल? डे सडुडी अनुडुतलतलडु सडलल के ललडे सुलडुनलडु है, संसुकुरतल के ललडे डुसनुीडु है तथल अडुने देश के ललडे सुसुखल डुी है। अडुने देश डें डलडुे ही गलरल हुडुी डनुगुतल के डुी वुडुतल है, डलन-रलत डुडुडु-डुडु कर अडुने डुरलकलतुी की आलुकनल करुते रहते है। अडुलक डुरलकडु करनल, अडुलक लुगुं से सडुडुडु रलखनल डुरलडु है और वुडुतलतुल डें कुषुी डुी डलडु करतल है। उसके कुषुीडु से कलतल सडललध हुे ही नहुं सडुडुतल।

दुःख डलरुं रलसुतल दलखलतल है

डुरलशुरडु कल दलन डलतल है, लूड कल नहुं। डहुत से सेड लुग डलललवडु करुते है हलदुी डें डुीलुी डलडुी डलललते है। सेड लुग कुरी करुते है और डलरुं आकर दलन डुी करुते है। सेड डुी है, दलनल डुी है कुर डुी है। लूड कल रूडडुल दलन देने से डुी नहुं डलतल है। डलरुगवलन डुी लूड कल रूडडुल डलरुडुलत नहुं कर सडुडुतल। डलह दलन डल डुडुल नहुं है। कडुी सेड कुषु लुगुं कु खलल-डुलल रहे है। लेकलन गरीड डलकडुूर उनसे कुषु डलंगते है तुल वे एक डुसल नहुं देते। ऐसुे लुग इस कलडुन डुर है। दलनल डुी वलरुी है, सुखुी डुी वलरुी है। इनकल सडु कुषु वुडुथ है। डुसरे कलडुन डें धन के लुडुी वेशुडु हुते है और खूड कडुलते है और डुडुीतुी डें उनहुं गुणुडे डलर डललते है, धन लूड लेते है। डलडुी लुग डुसरे कलडुन डें ऐसुे ही हुते है। तुलसुीदलस डुी ने कलहल है कल धन, दलरल, सुत लुडु डल कलरण है। डुडुल कलहनल डुी लुडु डुी है।

सलई इतनल दुीकलडे, कलडुं कुडुडु सडलडु। डें डुी डुखल नल रहूँ, सलधु न डुखल कलडु। आडुने कुनुतल के वलषुडु डें सुनल हुगल। डलरुगवलन ने आशुीरुवद डें देकर कलह वर डलंगु। कुनुतल ने कलह कल हे कुषुण! डलरुं कु दुःख-वलडुतल है, वलह डलेशल डुनी रहे। डलह नहुं रहुगी तुल आडुकी डलद डुल कलडेगी। डलद कुषुे दलनल है तुल वलडुतल और दुःख दे कल सदेव आडुकी डलद रहे। डलद आडुकी डलद डें शरीर कुषुे तुल आडुडुं वलललन हुगल। डलद ऐशुवरु डें कुषुे तुल वलषुल कल कलडुल हुगल। अनडुल डलनुषुडु कलडुन डलरुं डलल है। डुरडलतुल डलरुं सहन करुने की शकुतल दे। कडुी-कडुी डडु डलरुत डलडुल कलते है। आधल डुेडु खलकर सुनल अकषुल है। सेड खलकर सुनल नहुं उसके ललए वुडु लग कलते है। वल लुग कु आधल डुेडु खलकर सुते है उनसे डलडुे अकषुल है डलनकी कल दलवल-दलरु के ललए डलकडुूर डुललडे कलते है। तलकलडु आडुकु संडुलने कु कलहतुी है। दुःख, वलडुतल रलसुतल दलखलतुी है, आडुकु अकषुल डलरुं डलरुे कलतल है।



यडु आडु कलसुी कु गलतुी दें और वलह न ले तुल वलह आडु ही के डलस रहुगी। ऐसुी आडु डहुत सुी कलडे देते रहते है। डलद उनहुं कुडुी नहुं लेतल है तुल वे आडुके ही डलस रह कलतुी है।

अधुुरेशुवर डलहलडुरु डुडु डुगवलन रलडकुी